

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



उपयुक्त पात्र

राजा विक्रमादित्य फिर से पेड़ पर बेताल को लेने पहुंचे। उन्हें देखकर आश्चर्यचकित बेताल ने कहा, “राजन, बार-बार मुझे लेकर जाते हो, तुम ऊब गए होंगे।” राजा ने कुछ भी नहीं कहा। उन्हें शांत देख उसने फिर कहा, “ठीक है, मैं तुम्हें दूसरी कहानी सुनाऊंगा। वह तुम्हें ऊबने नहीं देगी” और बेताल ने दूसरी कहानी सुनानी शुरू की।

कन्नौज में कभी एक बहुत ही धार्मिक ब्राह्मण रहता था। विदुमा नामक उसकी एक जवान पुत्री थी जो बहुत अधिक सुंदर थी। उसका चेहरा चांद की तरह था और रंग पिघले हुए सोने की तरह था।

उसी शहर में तीन विद्वान ब्राह्मण युवक रहते थे। वे तीनों विदुमा को बहुत पसंद करते थे और उससे विवाह करना चाहते थे। उन्होंने कई बार विवाह का प्रस्ताव भी रखा था पर हर बार ब्राह्मण ने प्रस्ताव ठुकरा दिया था।

एक दिन दुर्भाग्यवश विदुमा बीमार पड़ गई। बड़े ब्राह्मण ने उसे बचाने की हर संभव कोशिश की पर वह ठीक नहीं हो पाई और परलोक सिधार गई। तीनों ब्राह्मण युवक बहुत दुखी होकर, कई दिनों तक विलाप करते रहे और उन्होंने शेष जीवन विदुमा की याद में व्यतीत करने का निश्चय किया।

पहला ब्राह्मण युवक उसकी समाधि के पास कुटिया बनाकर रहने लगा और उसकी भस्म को अपना बिस्तर बना लिया। वह दिनभर भिक्षा मांगता और रात में उसी बिस्तर पर सोता था।

दूसरे ब्राह्मण युवक ने विदुमा की हड्डियां इकट्ठी करके गंगाजल में डुबोई और नदी के किनारे तारों की छांव में सौने लगा।

तीसरे ब्राह्मण युवक ने सन्यासी का जीवन व्यतीत करना शुरू किया। वह गांव-गांव भिक्षा मांगकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा। एक दिन इसी प्रकार जब वह किसी गांव में घूम रहा था तो एक व्यापारी ने उससे अपने घर में रात व्यतीत करने का अनुरोध किया।

व्यापारी का निमंत्रण स्वीकार करके वह उसके घर चला गया। रात में सभी भोजन करने बैठे। व्यापारी का छोटा बच्चा जोर से रोने लगा। उसकी मां ने उसे शांत करने की बहुत कोशिश की पर सब व्यर्थ रहा। थक हारकर परेशान औरत ने बच्चे को उठाकर चूल्हे में झोंक दिया। बच्चा तुरंत भस्म हो गया।

ब्राह्मण युवक यह सब देखकर भयभीत हो गया। गुस्से से कांपता हुआ वह अपने भोजन की थाली छोड़कर उठा और बोला, “तुम लोग बहुत ही क्रूर हो। एक भोले-भाले बच्चे को मार डाला। यह एक पाप है। मैं तुम्हारे यहां भोजन ग्रहण नहीं कर सकता।”

मेजबान प्रार्थना करता हुआ बोला, “कृपया आप मुझे क्षमा करें। आप यहां रुककर देखें कि कोई क्रूरता नहीं हुई है। मेरा बच्चा पूरी तरह सुरक्षित है। मैं उसे वापस जीवन दान दे सकता हूँ।” यह कहकर उसने प्रार्थना की एक छोटी सी किताब निकाली और कुछ मंत्र पढ़ने लगा। बच्चा भस्म से पुनः जीवित हो गया। आश्चर्यचकित ब्राह्मण को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। अचानक उसे एक विचार आया। मेजबान के सो जाने पर ब्राह्मण युवक ने वह मंत्र वाली किताब उठाई और गांव छोड़कर वापस अपनी जगह आ गया।



अब वह विदुमा को जीवित करना चाहता था। उसे विदुमा की भस्म और हड्डियां चाहिए थीं। वह दोनों ब्राह्मण युवक के पास गया और बोला, “भाइयों, हम लोग विदुमा को जीवित कर सकते हैं, पर उसके लिए मुझे उसकी भस्म और हड्डियां चाहिए।” दोनों ब्राह्मण युवक यह

सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने हड्डियां और भस्म लाकर उसे दे दीं। तीसरे ब्राह्मण युवक ने जैसे ही मंत्र पढ़ा विद्रुमा भस्म से निकलकर खड़ी हो गई। वह और भी खूबसूरत लग रही थी। तीनों ब्राह्मण युवक उसे देख बहुत प्रसन्न हुए। अब उन्होंने आपस में उससे विवाह करने के लिए लड़ना शुरू कर दिया।

बेताल रुका और राजा से पूछा, “राजन, तीनों में कौन उसका पति बनने के लिए उपयुक्त है?” राजा विक्रमादित्य ने कहा, “पहला ब्राह्मण युवक” बेताल मुस्कराया। राजा ने फिर कहा, “तीसरे ब्राह्मण युवक ने मंत्र से उसे जीवन दिया, यह उसने पिता का काम किया। दूसरे ब्राह्मण युवक ने उसकी हड्डियां रखी थीं, जो कि एक पुत्र का काम था। पहला ब्राह्मण युवक उसकी भस्म के साथ सोया जो एक प्रेमी ही कर सकता है इसलिए वही विवाह के योग्य है।”

“तुम सही हो।” बेताल यह कहकर फिर उड़कर पीपल के पेड़ पर चला गया।